Impact Factor : 7.720 ISSN 2349-364X

वेदाञ्जलि Vedanjali

अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत्समीक्षित षाण्मासिकी शोधपत्रिका

(International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research)

वर्ष-१२ अंक-२३, भाग-१ जनवरी-जून २०२५

प्रधान सम्पादक
डॉ० रामकेश्वर तिवारी

सह सम्पादक
श्री प्रसून मिश्र

प्रकाशन : वैदिक एजूकेशनल रिसर्च सोसाइटी, वाराणसी

Scanned with OKEN Scanner

Impact Factor : 7.720 ISSN-2349-364X

वेदाञ्जलि

अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत्समीक्षित षाण्मासिकी शोधपत्रिका

(International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research)

वर्ष-१२ अंक-२३ भाग-१

जनवरी-जून, २०२५

प्रधानसम्पादक

डॉ० रामकेश्वर तिवारी

सह सम्पादक

श्री प्रसून मिश्र

प्रकाशक

वैदिक एजूकेशनल रिसर्च सोसाइटी

वाराणसी

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

- स्वामी दयानन्द के वेदभाष्य का शैली वैशिष्ट्य — 1–3
  डॉ० योगेन्द्र कुमार भानु व दीपिका शर्मा
- बी०एड० नवीन पाठ्यक्रम (दो–वर्षीय) के प्रति अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन — 4–8
  डॉ० अजय कुमार यादव
- विवाहित एवं अविवाहित महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में तनाव प्रबन्धन — 9–12
  डॉ० गुणबाला आमेटा व अभिलाषा सामरा
- जीवन में संस्कारों का महत्त्व एवं उपनयन संस्कार की प्रासंगिकता — 13–15
  डॉ० अखिलेश्वर प्रसाद शुक्ल
- भारतीय ज्ञान परम्परा में पर्यावरण — 16–19
  डॉ० भारती
- शेखावाटी के भित्तिचित्रों में मुगलकला एवं संस्कृति — 20–24
  डॉ० चार्वी महला
- गुण–दोषदृष्ट्या वर्णोच्चारणत्वम् — 25–29
  Prof. Dharmananda Rout
- भूमिगत जल और पुनर्भरण : एक भौगोलिक अध्ययन — 30–33
  डॉ० कमलेश कुमार
- वर्णोत्पत्ति और बौद्ध दर्शन — 34–37
  डॉ० किरन
- गृहस्थाश्रमस्य सदाचारः — 38–40
  डॉ० मालविका तिवारी
- राष्ट्रीय सांस्कृतिक आन्दोलन में हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता का योगदान — 41–45
  डॉ० मंजरी खरे
- गुरूबचन सिंह के उपन्यास 'वनपाखी' में नारी विमर्श — 46–49
  डॉ० पल्लवी कुमारी निषाद
- संस्कृत महाकाव्यों में धर्म का स्वरूप एवं अवधारणा — 50–52
  डॉ० राधा देवी
- स्वयं सहायता समूह का भारतीय ग्रामीण महिलाओं की उन्नति में योगदान — 53–55
  डॉ० राजेश रंजन
- योगदर्शन के अनुसार चित्त का शास्त्रीय स्वरूप — 56–58
  डॉ० संदीप कुमार
- संस्थागत संगीत शिक्षा प्रणाली का समीक्षात्मक अध्ययन — 59–62
  डॉ० शशी रॉय
- मानव जीवन का सर्वोत्कृष्ट लक्ष्य : पुरूषार्थ चतुष्टय — 63–65
  डॉ० वेद प्रकाश

Scanned with OKEN Scanner

- हिमालयी लोक संस्कृति, लोक गीत एवं लोकगाथाएँ 66–68
  गणेश गिरी व डॉ० गजदीप कुमार आर्या
- कुसुम कुमार और मीराकान्त के नाटकों में स्त्री यौन शोषण की समस्या 69–71
  लोभान वर्मा व प्रो० मृदुला शुक्ल
- प्रोफेसर अभिराज राजेन्द्र मिश्र के कथा साहित्य में योगदान 72–74
  डॉ० उमा शर्मा व प्रियंका सिंह
- आयुर्वेद और सोवा रिग्पा : भारतीय चिकित्सा परम्पराओं का अद्भुत संगम 75–77
  प्रो० दीपंकर लामा
- चन्द्रकान्ता के कथा साहित्य में प्रयुक्त शैली विधान 78–82
  राहुल कुमार बाजपेई
- रामायण में सैन्य व्यवस्था : एक पर्यालोचना 83–86
  श्रीमती रूनु चटर्जी व डॉ० लाडली कुमारी
- छत्तीसगढ़ के लोक अनुष्ठानों एवं लोक जीवन में राम 87–88
  सरिता पटेल व प्रो० राजन यादव
- वैश्विक दक्षिण और बदलती विश्व व्यवस्था 89–92
  डॉ० पुष्पेन्द्र सिंह यादव
- सुरेन्द्र वर्मा कृत उपन्यास 'मुझे चाँद चाहिए' में निहित 'स्त्री संघर्ष' 93–96
  डॉ० धन लक्ष्मी शुक्ला
- श्री जागेश्वर धाम 97–99
  डॉ० ललित मोहन जोशी
- महाकविबाणभट्टस्य प्रासङ्गिकता 100–103
  डॉ० मुरलीधरमणित्रिपाठी
- वाल्मीकि रामायण में वर्णित विदुषी महिलाओं का आधुनिक समाज में महत्त्व 104–108
  डॉ० आशुतोष पारीक व डॉ० नेहा गौड
- भारतीय संस्कृति का संवाहक : संस्कृत वाङ्मय 109–113
  डॉ० निहाल सिंह व श्रीमती सोनल
- स्मृति ग्रन्थों में नारी जीवन दशा और दिशा 114–116
  डॉ० निशा त्रिवेदी
- रीतिकाल : पुनर्विचार की दरकार 117–119
  डॉ० सुधा सिंह
- भारतीय समाज में डॉ० भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक न्याय पर विचार : समकालीन परिदृश्य में 120–123
  डॉ० विश्व रंजन किरण
- डॉ0 राधावल्लभत्रिपाठिसम्मत शब्दव्यापार 124–127
  निशी व प्रो० पूनम लखनपाल
- हिन्दी साहित्य के वीरगाथाकाल में नारी 128–130
  प्रकाशीबाई मीना
- राष्ट्रोपासिका सीता वाल्मीकिरामीयं महाकाव्य के सन्दर्भ में 131–134
  अखिलेश प्रसाद शुक्ल

Scanned with OKEN Scanner

- अनुगीतोक्तदार्शनिकतत्त्वानां विमर्शः — 333–336
  रिधिमः पण्ड्या
- नासिरा शर्मा के साहित्य में राष्ट्रचिन्तन — 337–340
  रुचि सिंह
- नीरजा माधव के उपन्यास 'ताशकंद उत्तरगाथा' के सन्दर्भ में ललिता शास्त्री — 341–344
  प्रो० एस० प्रसन्ना देवी व डॉ० एल तिल्लै सेलवी
- प्रतिबिम्बलहर्यामलङ्कारविवेचनम् — 345–346
  एस् सन्तानम्
- स्वरभक्तिमूलकानाम् ऋग्वेदीयपदानां भाषातात्त्विकविश्लेषणम् — 347–349
  सन्दीपसरकारः
- चन्द्रालोकग्रन्थस्य काव्यस्वरूपे लक्षणपदविमर्शः — 350–353
  सत्येनशीटः
- इक्कीसवी सदी की हिन्दी कविता में अभिव्यक्त बाजारवाद — 354–357
  शैलेन्द्र कुमार
- हिन्दी साहित्य में आदिवासी स्वर — 358–360
  शशांक पाण्डेय
- वैदिक साहित्य, अनुष्ठान एवं चित् (चेतनाशक्ति) विज्ञान — 361–366
  सिद्धार्थ तिवारी
- दिनकरमिश्रकृतरघुवंश–सुबोधिनीटीकायाः प्रथमसर्गस्य सम्पादितपाठः पाठभेदाश्च — 367–368
  सीमन्तिनी सेठ व डॉ० मञ्जुला जे विरडिया
- कालीपदतर्काचार्यकृतनलदमयन्तीयमिति नाटकस्य समाजोपादेयता — 369–372
  Sneha Maji
- सांख्यशास्त्रं कथम् आरब्धव्यम् – एतद्विषये दार्शनिकपर्यालोचनम् — 373–374
  Suparna Sarkar, Dr. Hemanta Bhattacharyya & Dr. Nikhiles Chakrabarti
- आलंकारिकाणां दृक्कोणतः निर्वाचितानां वङ्गीयरूपकाणां पर्यालोचनम् — 375–378
  विश्वमयदेराः व डॉ० साधनकुमारपात्रः
- अभिज्ञानशाकुन्तल : काव्यकौशल — 379–383
  डॉ० कोयल
- मृच्छकटिक के समय वर्णित देश की अवस्था — 384–386
  डॉ० कनक लता कुमारी व शेरसिंह कुशवाहा
- **William Shakespeare - The Brand of Literature** — 387-388
  Kishor Kumar & Anjali Dewangan
- **The Role of Purāṇic Education in Governance and Social Justice in the Indian Knowledge Tradition: An Analytical Study** — 389-392
  Bappaditya Roy
- **Regional Politics of Somalia: A study in the Horn of Africa** — 393-396
  Dheeraj Kumar

Scanned with OKEN Scanner

- Sītā's Resilience and Reciprocity : Navigating Familial Adversity in the Vālmīkrāmayaṇa 397-399
  Dr. Satheesh Kumar Kandoth
- Exploring The Focus of Megheswar Temple Inscription : An Overview 400-403
  Dr. Subhashree Priyadarsani
- Indian Darśanas in the Pluralistic World Especially Hindu-Christian Epistemology 404-406
  Sibin SR
- Study of Agriculture in State of Rajasthan 407-409
  Summan Meena
- A Critical Study of Social and Cultural Reflections in Haricandra's Jīvandharacampū 410-413
  Manashi Das
- A Critical Examination of Consciousness (*Vijñāna*) in the Buddhist Thought 414-418
  Narender Bodh
- India's Indo-Pacific Strategy: Geopolitical Balance and Economic Integration 419-424
  Navnit Kumar
- Vocational Interest of Higher Secondary Students in Relation to Parental Qualification and Occupation 425-428
  Prof. Nirmala Panigrahi
- Educational Relevance of an Epistemo Logical of Swami Sivananda in 21st Century 429-434
  Reeta Pant & Dr. Vinod Kumar Jain
- The Intersection of Advertising and Politics (Contemporary Perspectives on Political Photography) 435-442
  Sudatt Aditya & Dr. Kumar Jigeeshu
- Transforming NCTE-Recognized Stand-Alone Teacher Education Institutions into Multidisciplinary Higher Education Institutions: A Policy-Driven Shift Towards Holistic Education 443-445
  Yogeshwar Singh Yadav

♦♦♦

Scanned with OKEN Scanner

- श्रीमद्भागवते कुन्तीस्तुतेर्वैशिष्ट्यम् — 198–199
  Dr. Piyali Pal
- जे० कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन का विश्लेषण — 200–204
  डॉ० प्रमोद कुमार यादव
- अस्मिता की भाषा हिन्दी के उत्थान विस्तार में अनुवाद की आवश्यकता और महत्व — 205–207
  डॉ० पूनम श्रीवास्तव
- बाणभट्ट कृत कादम्बरी में प्रकृति–सौन्दर्य — 208–212
  डॉ० रवीना
- नव्यवेदान्तदर्शनस्य विकासधारा तत्प्रभावश्च — 213–218
  डॉ० साजनकुमारः
- दर्शनेषु स्त्रीस्वरूपचिन्तनम् — 219–221
  डॉ० सस्मितानन्दरनायकः
- भारत के आर्थिक परिदृश्य मे सूक्ष्म वित्त की भूमिका — 222–224
  डॉ० शकुंतला मीना
- राजी सेठ के कहानी–साहित्य में ग्राम का सामाजिक परिवेश और नारी की चेतना — 225–227
  डॉ० शमा अख्तर
- भारत रत्न कर्पूरी ठाकुर की सामाजिक अवधारणा : एक अध्ययन — 228–230
  डॉ० श्रवण कुमार राम
- योगभेदविवेचनम् — 231–233
  डॉ० सुकान्ति वारिक
- भारतीय दर्शन में नैतिक मूल्यों का विश्लेषण — 234–237
  डॉ० सुनिता कुमारी
- सूरकाव्य में वात्सल्य की सामाजिक प्रासंगिकता — 238–241
  डॉ० तस्मीना हुसैन
- रीतिकाव्य के साथ उर्दू शायरी तथा शास्त्रीय संगीत का सम्बन्ध : आलोचक रामस्वरूप चतुर्वेदी के विशेष सन्दर्भ में — 242–245
  डॉ० वेदपर्णा दे
- श्रीमद्रामायणे वास्तुविज्ञानम् — 246–248
  डॉ० विजयलक्ष्मीमहापात्रः
- महाभारते स्त्रीणां वैदुष्यम् — 249–252
  Dr. Y. Suresh & Kosuri Ananthacharyulu
- कृष्णापरिणयं महाकाव्य में प्रमुख सूक्तियाँ — 253–255
  गीता
- परमशिव की अभिव्यक्ति का मार्ग : वाक् सृष्टि — 256–259
  गोपाल दास व डॉ० बिशम्बर सिंह रन्जन
- वेदान्तपारिजातसौरभस्यानुसारं जिज्ञासाधिकरणस्य चिन्तनम् — 260–261
  ज्ञानेश्वर पाण्डेय

Scanned with OKEN Scanner

- श्रीमद्भागवत महापुराण में पुराण लक्षण समन्वय — 262–264
  हिमांशु रतूड़ी व डॉ० शिखा बंसल
- आकारान्तस्त्रीलिङ्गशब्दसाधनप्रक्रियायां पाणिनिसारस्वतव्याकरणयोः समीक्षा — 265–267
  जानी रवि देवशंकरभाई व डॉ० कमलेश छ० चोक्सी
- उत्तराखण्डीय कुमाऊँनी जौनसारी भाषायां पाणिनीयव्याकरणस्य प्रभावः — 268–270
  जसुदेवः
- व्यक्तित्व विकास और सोशल मीडिया : उच्चतर माध्यमिक छात्रों के सन्दर्भ में — 271–275
  डॉ० कमरुद्दीन व कल्पना वर्मा
- पंकज सुबीर के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श — 276–279
  डॉ० वंदना त्रिपाठी व क्रांति पाण्डेय
- भृगुप्रोक्तस्य वासाधिकारस्य विष्णुतत्त्वानुशीलनम् — 280–282
  श्रीमती लिङ्गारेड्डि उमामहेश्वरी
- कुमारसम्भववर्णिततिरश्चां रसाभिव्यक्तावदानम् — 283–286
  डॉ० नीरज तिवारी व लक्ष्मण जी तिवारी
- शिक्षाक्षेत्र में महिलाओं का योगदान — 287–290
  ममता प्रधान
- प्राचीन–नव्यन्यायदर्शनयोः अनुमानप्रमाणविचारस्य तुलनात्मकविवेचनम् — 291–295
  मौलिककुमार अरविन्दभाई भट्ट
- 'श्रीरामचरितम्' उपाख्य 'अरविन्दरामायणम्' में अलङ्कार–वर्णन — 296–299
  मोहन लाल वर्मा व डॉ० सूर्यकान्त त्रिपाठी
- वैदिकसाहित्ये पर्यावरणस्य घटकानां पर्यावरणसंरक्षणस्य चावधारणा — 300–305
  नन्दिनी चटर्जी
- कालगणना का महत्व एवं उपयोगिता — 306–309
  Neeraj Kumar Soni
- समकालीन हिन्दी उपन्यासों में जल संस्कृति और जल संकट — 310–313
  निर्मल यादव
- श्रीमद्भगवद्गीतोक्तयज्ञपदार्थविश्लेषणम् — 314–316
  डॉ० जितेंद्रकुमारद्विवेदी व पंकजकुमारपाण्डेयः
- लक्षणा शक्ति काव्यालोक के सन्दर्भ में — 317–321
  प्रियङ्क तिवारी
- स्वप्नवासदत्तम् में वर्णित आदर्श प्रेम एवं प्रासंगिकता — 322–325
  प्रियंका जोशी व डॉ० महेन्द्र प्रसाद सलारिया
- वैदिकवाङ्मय में आरोग्य — 326–329
  डॉ० सिद्धार्थ शंकर सिंह
- प्रेमचन्द के उपन्यासों में वर्णित समस्याएँ और संघर्ष — 330–332
  राकेश कुमार रैगर

Scanned with OKEN Scanner

- हिंदी व्यंग्य साहित्य का इतिहास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 135–137
  Amrit Raj
- नृत्य आधारित भारतीय ग्रन्थों का संक्षिप्त वर्णन : भारतीय ज्ञान परम्परा के सन्दर्भ में 138–141
  अनघा निलदावार व डॉ० प्रो० कविता होले
- 'कुइयांजान' : स्त्री और सामाजिक–सांस्कृतिक यथार्थ 142–144
  अनीता राज व डॉ० मनप्रीत कौर
- गोपीगीतस्य अच्सन्धिशब्दानामध्ययनम् 145–147
  अनूपकुमारः
- तमस और कितने पाकिस्तान : विभाजन के दो साक्ष्य 148–151
  अरविन्द कुमार व डॉ० शशि किरण
- उत्तर भारतीय लोक संस्कृति एवं परम्परा में भोजपुरी लोकगीतों की प्रासंगिकता 152–155
  प्रो० किन्शुक श्रीवास्तव व अर्चना कुशवाहा
- एकादेशासिद्धत्वविमर्शः (पाणिनिचन्द्रगोमिभोजसन्दर्भे) 156–159
  अशोक कुमार
- श्रीहेमचन्द्राचार्य का काव्यशास्त्रीय अवदान (काव्यानुशासन के परिप्रेक्ष्य में) 160–164
  भुआल निर्मल
- उन्नीसवीं सदी में भारत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान के कारण और उपलब्धियाँ : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 165–168
  सुनील कुमार पांडे व डॉ० अभिषेक कुमार
- गोपथ–ब्राह्मण में यज्ञ का स्वरूप 169–172
  डॉ० अनिता रानी
- भारतीय शास्त्रीय संगीत में कलात्मक सिद्धान्तों की भूमिका 173–174
  डॉ० अंशु वर्मा
- धर्मशास्त्रेषु प्रायश्चित्तेषु व्रतानां विचारः 175–178
  Dr. Balaram Padhan
- संस्कृत साहित्य की मानवता को अनुपम भेंट 'संस्कार' – एक अनुशीलन 179–181
  डॉ० हनुमदीश्वर कुमार सिंह
- योगदर्शने नियमाः 182–184
  डॉ० हरीश चन्द्र शर्मा
- श्रीमद्भागवतीयस्तुतिषु राष्ट्रमङ्गलसाधकतत्त्वम् 185–186
  डॉ० जुबुलि षडङ्गी
- आदिवासी समुदाय के दार्शनिक विचार : एक अवलोकन 187–190
  डॉ० ज्योति कुमारी
- अहिंसावादी विचारधारा का दार्शनिक चिन्तन 191–193
  डॉ० मधु
- परमलघुमञ्जूषादिशा निपातार्थविचारः 194–197
  डॉ० पशुपतिनाथमिश्रः

Scanned with OKEN Scanner

उन्नीसवीं सदी में भारत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान के कारण और उपलब्धियाँ : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

सुनील कुमार पांडे* व डॉ. अभिषेक कुमार*
*सहायक आचार्य, डी बी एस, कानपुर
**सहायक आचार्य, आर एम पी पी जी कॉलेज

सारांश: भारत में उन्नीसवीं सदी सभी क्षेत्रों में एक व्यापक परिवर्तन के रूप में जाना जाता जहाँ एक तरफ अंग्रेजों ने भारत में अपने अपनी जड़ें मजबूत करना प्रारंभ कर दिया था। वहीं दूसरी तरफ भारत के सांस्कृतिक विरासत पर आघात करके अपनी कथित सर्वोच्चता को सिद्ध करने और स्थापित करने का पूरा प्रयास किया गया।इसके मूल में भारतीय सभ्यता कि प्राचीन वैभवशाली परंपरा की जानकारी के उपरान्त अपनी हीनता की भावना को छुपाना था अथवा साम्राज्यवादी इतिहासकारों द्वारा कथित उपकारवादी नीति के तहत भारत का उत्थान था।प्रस्तुत शोध पत्र में इस संदर्भ में विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

की वर्ड:- स्व, भारतीय राष्ट्रीय चेतना, अंग्रेजी शिक्षा, साम्राज्यवादी लेखन, भारतीय ज्ञान परंपरा, राजाराम मोहन राय, महात्मा गाँधी, स्वामी विवेकानंद, अखंड भारत की अवधारणा।

एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना के उपरान्त भारतीय पुस्तकों का आधिकारिक रूप से अंग्रेजी अनुवाद होना प्रारंभ हो गया था जिससे भारतीय प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की अद्वितीय परंपरा से नव जागृति, पश्चात समाज अब अवगत हो रहा था। ऐसा नहीं कि ये पहली बार हुआ सिकंदर के आक्रमण के उपरांत से ही यूरोप ने भारतीय ज्ञान परंपरा के बारे में बड़ी गहराई से अध्ययन करना प्रारंभ कर दिया था।शक, पल्लव, हूण आक्रमण के उपरान्त भी ऐसे साक्ष्य प्राप्त होते हैं जिससे ये कहा जा सकता है कि संपूर्ण विश्व के अधिकांश भागों में भारतीय ज्ञान और दर्शन ने नई चेतना का विकास किया था। यूरोपीय पुनर्जागरण के उपरान्त न केवल लैटिन साहित्य में छिपे हुए ज्ञान से यूरोप अवगत हुआ बल्कि साथ ही साथ उनकी पुस्तकों में भारतीय दर्शन और ज्ञान का उल्लेख था उससे भी बुद्धिजीवियों ने अवगत होना प्रारंभ कर दिया था। मुगलों के समय विशेषकर अकबर और उसके बाद के काल में भारतीय प्राचीन परंपराओं, ज्ञान और दर्शन से संबंधित पुस्तकों का व्यापक अनुवाद, फारसी में देखने को मिलता है। जिसके कारण हमें कई ऐसे उदाहरण प्राप्त होते हैं जिससे ये पता चलता है कि मुगल बादशाह को भारतीय श्रेष्ठ ज्ञान पंपरा ने नई दिशा और सोच प्रदान की।उदाहरणार्थ अकबर और दारा शिकोह के कार्य व्यवहार में भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का प्रभाव देखने को मिलता है।अट्ठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अंग्रेजों ने जब भारत में अपनी सत्ता धीरे धीरे छल एवं बलपूर्वक स्थापित करना प्रारंभ किया, उसके बाद से विशेषकर एसिटिक सोसाइटी की स्थापना के बाद आधिकारिक रूप से भारतीय ज्ञान परंपरा से वे गहराई से अवगत होना प्रारंभ हुए।19 वीं शताब्दी में 1813 के बाद जब भारत में मिशनरियों के प्रवेश को आधिकारिक मान्यता दी गई भारत में आने वाले अंग्रेज अधिकारियों के मन में भारतीय श्रेष्ठ ज्ञान परंपरा का भय इस कदर व्याप्त हुआ कि वे अपने आप को विश्व की सर्वाधिक सभ्य जाति, सभ्य सभ्यता स्वयं घोषित करके और अपने शोषण एक नैतिक आधार प्रधान करने की चेष्टा करने लगे। इसी क्रम में हमें उन्नीसवीं शताब्दी में होने वाले विभिन्न पुनर्जागरण आंदोलनों और इसके फलस्वरूप ब्रिटिश हुकूमत द्वारा बनाए गए विभिन्न नियमों कानूनों के अध्ययन करने की आवश्यकता है।

भारतीय पुनर्जागरण का वास्तविक क्रम 19 वीं शताब्दी से शुरू होता है लेकिन इसके बीज कुछ समय पूर्व से ही रोपे जा चूके थे।उन्नीसवीं सदी के पूर्व जो भी संत महात्मा सुधारक इस देश में हुए उनका प्रमुख विषय धर्म था, क्योंकि उस समय समाज और धर्म आपस में एक दूसरे के पर्याय थे। सांस्कृतिक पहचान का आधार धर्म था।18 वीं सदी में मिर्जा अबू तालिब खान उन भारतीयों में पहले थे जिन्होंने इंग्लैंड जाकर आंग्ल जीवन को देखा। मिर्जा साहब पश्चिमी संस्कृति के भौतिक प्रवृति से नाखुश थे।परन्तु उन्होंने वहाँ की वैज्ञानिक उपलब्धियों का गुणगान किया।उनका मानना था कि पश्चिम के औद्योगिक विधान इस्लामिक नियम के विरुद्ध नहीं है ।इसके अतिरिक्त मुगल

Scanned with OKEN Scanner

हुआ पश्चात विचार को में डेविड जैसे शिक्षा शास्त्री कैरीं जैसे धर्म प्रवर्तक और मैकाले जैसे प्रशासकों ने भारत आपके अधिकांश बुद्धिजीवियों के दृष्टिकोण में विशिष्ट परिवर्तन की है वास्तव में मध्ययुगीन स्काई ने भारत के जीस गौरवशाली अतीत को ठग दिया था उसका सर्वप्रथम साक्षात्कार विदेशी विद्वानों के प्रयत्नो से ही हुआ विलियम जोन्स तथा मैक्स मूलर आदि विदेशी विद्वानों ने जब भारत की प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन किया एवं उसका अनुवाद किया तो भारतीय सभ्यता और संस्कृति ओके वैभवशाली ज्ञान परंपरा की श्रेष्ठता स्थापित हो गई जिससे भारतीयों को अपने गौरव पूर्ण अतीत का साक्षात्कार होने का अवसर प्राप्त हुआ और उसके प्रति उनमें आत्म सम्मान जागृत हुआ इसके परिणामस्वरूप भारतीय अपने प्राचीन धर्म दर्शन और संस्कृति के वास्तविक रूप को प्रकाश में लाने के लिए आगे बढ़े साथ ही साथ पत्रकारिता प्रेस समाचार पत्रों पत्रिकाओं साहित्य के विभिन्न विद्याओं से विचारों का आदान प्रदान बढ़ा भारतीय अब ब्रिटिश हुकूमत की वास्तविक शोषणकारी प्रवृत्ति और क्रूरता से अवगत होने लगे थे।

उन्नीसवीं सदी के महत्वपूर्ण घटना यातायात के साधनों और संचार व्यवस्था का विकास भी रहा।1845 के बाद भारत में रेलवे के विकास प्रारंभ हो गए थेसाथ ही साथ संचार की नई साधन यथा पत्र, तार इत्यादि के द्वारा भारत की भौगोलिक सीमाओं दूरी को पाटने का प्रयास किया जा रहा थाहालांकि इनके विकास के पीछे साम्राज्यवादी हित प्रमुख था परंतु इसने अनायास ही भारत की सांस्कृतिक एकीकरण कर दिया, जिससे भारतीय राष्ट्रवाद को पनपने का और फैलने का अवसर प्राप्त हुआपश्चात सभ्यता ने तर्क को विश्वास की जगह वरीयता दी, वाह्य धार्मिक कर्मकांडों , सामाजिक प्रतिबंधों, के स्थान पर व्यक्ति की स्वतंत्रता और उसकी भावनाओं को वरीयता दीइन सभी विचारों ने भारत के तर्क और बुद्धि को एक नया आयाम दिया, जिसके कारण भारतीयों ने प्राचीन परंपराओं और कुरीतियों को नवीन ज्ञान की कसौटी पर कसकर परखना शुरू किया।भूतकाल पर आलोचनात्मक दृष्टिकोण और भविष्य के लिए नवीन महात्वाकांक्षाओं ने पुनर्जागरण को विशिष्ट बनाया।विवेक और न्यायसंगत निर्णय लेने में व्यक्ति को वैचारिक आधार दिया।शास्त्रों के परंपरागत अर्थों की समालोचनात्मक दृष्टि से जांच की गई और नैतिकता तथा धर्म की नवीन धारणाओं ने सनातनी विश्वास को और प्रथाओं के परीक्षणों परांत उनमें परिवर्तन भी किया। इस कारण इस युग में समाज, राजनीति, कला, धर्म, अर्थ साहित्य आदि व्यवस्थाओं में नवीन विचारों को जन्म दिया। 19 वीं शताब्दी में भारत के पुनर्जागरण में अगर सबसे बड़ा योगदान है तो भारतीय मध्यम वर्ग का हैराजाराम मोहन राय स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद इसी वर्ग से आते हैंजिन्होंने भारतीय समाज और धर्म सुधार में अपना अमूल्य योगदान दिया।वास्तव में इस वर्ग में ही सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, बहुविवाह जैसी कुरूतियों (उतनी व्यापक नहीं जितना की पश्चात् इतिहासकारों ने वर्णन किया है) परन्तु अवश्य ही विद्यमान थीइन नव सुधारकों ने समाज के रहन सहन, भेषभूषा आचार-विचार में परिवर्तन लाकर, इन कुप्रथाओं के प्रति समाज को जागृत किया। बाद में सुरेंद्रनाथ बेनर्जी, बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गाँधी, मोतीलाल नेहरू सरदार पटेल आदि ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में इसमें व्यापकता लाने का प्रभावी प्रयास किया।ये सभी आधुनिक शिक्षा प्राप्त वर्ग से आते थे, जिन्हें अपनी प्राचीन ज्ञान परंपरा का ज्ञान था।उन्होंने भारतीय धर्म ग्रंथों, वेदों उपनिषदों का ज्ञान समाज के सम्मुख रखा। वही साथ ही साथ पाश्चात्य शिक्षा में छुपी आधुनिक शिक्षा का भी प्रतिकार नहीं किया। दूसरी तरफ वैज्ञानिक शिक्षा ने हमें अपने भू-विज्ञान, गणित पद्धति, रसायन और भौतिकी के यथार्थ का बोध कराया, जिसे हमने कभी पश्चात जगत को दिया था। इसके साथ ही हमने पाश्चात्य विज्ञान में नए अविष्कारों का भी बोध हुआ, जिसके बल पर हमारे आज का विज्ञान का युग अस्तित्व में है। वास्तव में देखा जाए तो हमारी प्राचीन वैज्ञानिक शिक्षा का ही प्रतिफल है जिसमें नित्य नए शोधों के द्वारा न केवल पश्चात् जागृत हुआ बल्कि 19 वीं शताब्दी में इसने भारतीय पुनर्जागरण में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया।इसके अतिरिक्त ललित कला के ज्ञान का भी व्यापक प्रचार प्रसार हुआ। आधुनिक वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और साहित्य (काव्य)के क्षेत्र में जागृति आई।

भारतीय और पाश्चात्य शैलियों का समन्वय हुआ और इसमें निश्चित समन्वित शैली के अनेक भवन आज भी देखने को मिलते हैंवास्तव में इन भिन्नताओ के मूल में मौलिक एकता भारतीय है, जिसकी खोज भारत के द्वारा

Scanned with OKEN Scanner

शाहज़ादा मिर्जा जहीरउद्दीन अजफरी ने भी अंग्रेजों के न्याय प्रशासन की प्रशंसा की। पश्चात संस्कृति के उत्प्रेरण में सबसे बड़ी भूमिका उनकी अंग्रेजी भाषा की थी जिसके प्रति हिन्दुओं ने धीरे धीरे अपनी रूचि विकसित कर ली थी।टर्नर मेकन ने 22 मार्च 1832 को एक वक्तव्य में कहा था की भारत के लोगों ने कलकत्ता में अंग्रेजी भाषा सीखने की सबसे प्रबल इच्छा प्रकट की है और वह इसके लिए काफी खर्च करने को तैयार हुए हैं और वहाँ अच्छे शिक्षकों की कमी पर जोरदार शिकायत की जाती।इसके अतिरिक्त अनेक भारतीय जिसमें प्रसन्न कुमार टैगोर, कृष्णमोहन बेनर्जी ने फारसी के स्थान पर अंग्रेजी लाने की वकालत की थी अर्थात मध्यम वर्गीय हिंदू, अंग्रेजी शिक्षा और पश्चात ज्ञानविज्ञान की ओर अधिक आकर्षित हो रहे थे। बाद में राजा राममोहन राय इनके भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत बनकर आ गया है।रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार पुनर्जागरण उस प्रक्रिया का नाम है जिससे भारत संभला, जिससे उसने यूरोप से नैतिक कुश्ती लड़ते समय अपने हिलते हुए पांव को स्थिर किया, जिससे उनको यह विश्वास हुआ कि मैं सचमुच उतना बुरा नहीं हूँ जितना कि लोग बता रहे हैं बल्कि मेरे पास कुछ ऐसे अनुभव भी है जिनका इन बच्चों को पता ही नहीं। वास्तव में इस पुनर्जागरण से भारत को अपनी वास्तविक पहचान और सख्ती के बारे में पता चला ओर उन्हें अपनी शक्ति के सम्मुख पश्चात सभ्यता अत्यंत लघु प्रतीत होने लगी। पुनर्जगरण से पूर्व भारत की मनोदशा जिस स्थिति तक पहुँच गई थी। निरंतर आधीनता के कारण गौरवशाली अतीत उनके मस्तिष्क से विस्मृत हो चुका था। पश्चात विचारों और तर्कशक्ति ने उन्हें अपनी स्मृति को वापस लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया और जिससे एक नवीन चेतना भारतीयों के अंदर स्फुटित हुई।भारतीय पुनर्जागरण सांस्कृतिक जीवन की वह नवीन व्यवस्था है जिसने उसे पुरातन सत्यों को नए रूप में प्रस्तुत किया।प्राचीन सिद्धांतों को बिना तोड़े मरोड़े नई भेषभूषा पहनाकर नवीन आवरण में भारतीय संस्कृति का निर्माण हुआ। आत्मजागृति की एक ऐसी भावना का प्रादुर्भाव हुआ जिसने नए भारत निर्माण की नींव रखी।

भारतीय पुनर्जागरण के मूलभूत कारणों दृष्टिपात करें तो अठारहवीं सदी के उत्तरार्ध में भारत की राजनीतिक और समाजिक हीनता ने अंग्रेजों को यहाँ मजबूती प्रदान की थी राजनीतिक विस्तार के साथ ही अंग्रेजों ने यहाँ आर्थिक सत्ता भी जमा ली थी अब अंग्रेजों ने यहाँ पश्चात सभ्यता और संस्कृति का प्रचार प्रसार करना भी शुरू कर दिया था भारत के पास जा तीकरण इसके कारण भारत की मूल सांस्कृतिक चेतना को एक आग हाथ लगा जिसके कारण हिंदू जागृत हुआ इसके विपरीत अंग्रेजों ने अपनी सत्ता के बल पर जो राजनीतिक एकता स्थापित करने का प्रयास किया उसने अनायास ही भारत के स्वत्व को जागृत किया और भारत ने अपने पुनर्जागरण के लिए तार्किक विमर्श करना प्रारंभ कर दिया इसाई मिशनरियों के प्रवेश और उनकी शिक्षा ने जिसके कारण वे अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए भारतीय धर्म और समाज की खिल्ली उड़ाते थे और उसकी बुराइयों को उजागर करके प्रस्तुत करते थे अनेक भारतीयों विशेषकर हिन्दुओं को जहाँ एक तरफ ईसाई धर्म ने आकर्षित किया वहीं दूसरी तरफ भारतीय समाज में एक प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई जिसके फलस्वरूप ब्रह्मसमाज आर्य समाज और अनेक सामाजिक आंदोलन प्रारंभ हुए ये भारतीय पुनर्जागरण के प्रमुख अंग है।इनके मूल मैं अंग्रेजी शिक्षा भी थी।सर्वप्रथम मार्च मैन नामक पादरी ने अंग्रेजी भाषा को भारत में ईसाई धर्म के प्रचार प्रसार के लिए माध्यम बनाने की सिफारिश की इसके बाद चाल से ग्रांट ने अंग्रेजी शिक्षा की वकालत 1792 में की जिसके उपरान्त बम्बई बंगाल और मद्रास में अंग्रेज अनेक अंग्रेजी स्कूल खोले गए इसमें कलकत्ता का हिंदू कॉलेज भी जो बाद में प्रेसिडेंसी कॉलेज के नाम से विकसित हुआ प्रसिद्ध है 1835 में लाड़ मैकाले ने शिक्षण नीती के परिणामस्वरूप शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी रखना प्रारंभ करवाया इस क्रांतिकारी परिवर्तन ने अंग्रेजी का प्रसार तीव्र गति से करवाया बम्बई मद्रास और कलकत्ता विश् वविद्यालयों की स्थापना हुई इसका एक परिणाम यह भी रहा कि पाश्चात्य शिक्षा के प्रसार से भारतीय पाश्चात ज्ञान विज्ञान के संपर्क में आए और उनके विचारों और दृष्टिकोण में परिवर्तन हुआ भारत के मस्तिष्क का बौद्धिक अलगाव भंग हुआ अब वे नवीन विचारों से संसार को सोचने लगे या यूं कहें की उनका बौद्धिक पुनर्जागरण हुआ पश्चात साहित्य दर्शन और ज्ञान विज्ञान ने हमारे पुनर्जागरण के मार्ग को प्रशस्त कर दिया इसके अतिरिक्त अंग्रेजी शासनकाल में भारत का संपर्क ना केवल यूरोप से अमेरिका रूस चीन और जापान आदि राज्यों से भी होने लगा इसका सकारात्मक प्रभाव यह रहा कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भारतीयों के सृजनात्मक प्रवृतियों का विकास

Scanned with OKEN Scanner

संरक्षकद्वय

जगत्शिष्य पं. शिवपूजन चतुर्वेदी

श्री नरवट वॉयस (जर्मनी)

प्रधानसम्पादक

डॉ0 रामकेश्वर तिवारी

सह सम्पादक

श्री प्रसून मिश्र

सम्पादक मण्डल

डॉ0 उमाकान्त चतुर्वेदी

डॉ0 कुमार मृत्युंजय राकेश

डॉ चन्द्रकान्त दत्त शुक्ल

डॉ0 जितेन्द्र कुमार

शोध पत्र–समीक्षक मण्डल

- डॉ0 उमापति मिश्र, अतिथि अध्यापक, वेद विभाग, का0हि0वि0वि0, वाराणसी
- डॉ0 पवन कुमार यादव, सहायकाचार्य, दर्शन, सी0एम0पी0 डिग्री कॉलेज, प्रयागराज
- डॉ0 चिरंजीवी अधिकारी, आचार्य, व्याकरण, श्रीमाता वैष्णो देवी गुरुकुल चरण पादुका कटरा, जम्मू कश्मीर
- डॉ0 निर्भय कुमार पाण्डेय, सहायकाचार्य (संविदा), ज्योतिष, रानी पद्मावती तारा योगतन्त्र आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, वाराणसी
- डॉ0 नीरज तिवारी, सहायकाचार्य, साहित्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, लखनऊ परिसर, लखनऊ
- डॉ0 नन्दकिशोर तिवारी, सहायकाचार्य, व्याकरण, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, लखनऊ
- डॉ0 रविशंकर पाण्डेय, सहायकाचार्य, संस्कृतविद्या विभाग, स0स0वि0वि0, वाराणसी
- डॉ0 सुनील कुमार तिवारी, सहायकाचार्य, हिन्दी, शहीद भगत सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ0 रंजन कुमार त्रिपाठी, सह–आचार्य, साहित्य, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ0 अशोक राम, असि0प्रोफेसर, भूगोल विभाग, एस0एन0 सिन्हा कॉलेज, वार्सलिगंज, बिहार
- डॉ0 शशिकान्त तिवारी, दर्शन विशेषज्ञ, हरियाणा

परामर्शदात्री समिति

प्रो0 बाल शास्त्री

प्रो0 रमेशचन्द्र पण्डा

प्रो0 हरेराम त्रिपाठी

प्रो0 हरीश्वर दीक्षित

प्रो0 रामजीवन मिश्र

प्रो0 श्रीपति त्रिपाठी

प्रो0 संतोष शुक्ल

प्रो0 (डॉ0) सिद्धार्थ शंकर सिंह

डॉ0 राजीव रंजन तिवारी

श्री जय प्रकाश चतुर्वेदी

प्रकाशन तिथि : 31 / 01 / 2025

सम्पर्क सूत्र

श्री अंकित दुबे

दूरभाष : 9473531601

Website : vedanjalijournal.com / e-mail : vedanjali2014@gmail.com

विशेष : पत्रिका के किसी भी प्रकार की समस्या के समाधान का अधिकार संरक्षकों के पास स्थायी रूप से सुरक्षित है तथा लेखकों के शोध–पत्र उनके अपने विचार हैं, पत्रिका परिवार उनके विचारों से सहमत हो यह आवश्यक नहीं है।

Scanned with OKEN Scanner

कई सदियों पूर्व की जा चुकी थी। यही मूलभूत भावना भारत को वास्तविक रूप में प्रकट करती है और इस भावना की अभिव्यकति अखंड भारत के कई भागों में जैसे अफगानिस्तान पाकिस्तान नेपाल भूटान बांग्लादेश जैसे राष्ट्रों में देखी जा सकती है, जो मूलतः भारत के ही अंग रहे थे। वर्तमान समय में हमें प्राचीन भारत की गौरवशाली सांस्कृतिक परंपरा ज्ञान परंपरा के द्वारा स्व का बोध करके आने वाली पीढ़ी को जागृति कर के रखने की आवश्यकता है, जिससे उन्हें न केवल भारत को बल्कि विश्व को एक नई प्रगतिशील दिशा देने में सक्षम बनाया जा सके।

संदर्भ सूची :

1. दिनकर रामधारी सिंह : संस्कृत के चार अध्याय, नेशनल बुक ट्रस्ट, पृ॰451
2. बुद्ध प्रकाश: भारतीय धर्म एवं संस्कृति, पृ॰224
3. शर्मा मथुरा लाल:भारतीय संस्कृति का विकास, शिव लाल अग्रवाल एंड कंपनी, आगरा, पृ॰422
4. सरस्वती दयानंद: सत्यार्थ प्रकाश, पृ॰443
5. शास्त्री विश्वनाथ:ब्रह्मसमाज का इतिहास, vol1
6. ग्रांट चार्ल्स: Observation the state of society among the asiatic subjects of great britain,
7. शर्मा श्रीराम : भारत में मुगल साम्राज्य, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।

Scanned with OKEN Scanner